प्रातःक्लास 30/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। भक्तिमार्ग के सतसंगों से यह जो ज्ञानमार्ग का सतसंग है यह है विचित्र। वहां तो जाकर साधु–संत आदि के सामने बैठते हैं कि रामायण वशिष्ट आदि सुने। तुमको भक्ति का अनुभव तो है। जानते हो अनेकानेक साधु संत भक्तिमार्ग के शास्त्र आदि सुनाते हैं। यहां तो बिल्कुल ही उनसे अलग है। यहां तुम किसके सामने बैठे हो? डबल बाप और माँ। वहां तो ऐसे नहीं है। तुम जानते हो बेहद का बाप भी है। कई अपने लौकिक बाप को भी ले आते हैं। तो लौकिक बाप भी रहता, पारलौकिक बाप भी रहता, अलौकिक बाप भी रहता। मम्मा भी रहती, बड़ी मम्मा कहो, छोटी मम्मा कहो। इतने सब सम्बन्ध हो जाते हैं। वहां तो ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं। न वह कोई फॉलोवर्स ही हैं। वह तो है निवृत्ति मार्ग। उसका धर्म ही अलग है। रात–दिन का फ़र्क है। यह भी तुम जानते हो लौकिक बाप से अल्पकाल क्षण भंगुर एक जन्म लिए मिलेगा। फिर नया बाप, नई बात। यहां तो अलौकिक भी है, पारलौकिक भी है। लौकिक से भी वर्सा मिलता है, पारलौकिक से भी वर्सा मिलता है। बाकी यह अलौकिक बाप है वण्डरफुल। इनसे कोई भी वर्सा नहीं मिलता। हाँ, इनके द्वारा शिवबाबा देते हैं; इसलिए इस पारलौकिक बाप को भी याद करते हैं। लौकिक को भी करते हैं। बाकी इस अलौकिक (ब्रह्मा) बाप को कोई भी याद नहीं करते। तुम बच्चे जानते हो यह भी है प्रजापिता। यह कोई को पता नहीं है। प्रजापिता ग्रेट–2 ग्रैंड फादर है। शिवबाबा को ग्रेट–2 ग्रैण्ड फादर नहीं कहते। लौकिक सम्बन्ध में लौकिक फादर और ग्रैण्ड फादर होते हैं। यह तो है ग्रेट–2 ग्रैण्ड फादर। ऐसे न लौकिक को न पारलौकिक को कहेंगे। अभी ऐसे ग्रेट–2 ग्रैण्ड फादर से वर्सा मिलता नहीं है। यह बातें बाप बैठ समझाते हैं। भक्तिमार्ग की तो बात ही न्यारी है। भक्ति माना दुर्गति। ड्रामा में वह भी पार्ट है। जो फिर चलता रहता है। बाप बतलाते हैं कैसे तुमने 84 जन्म लिये हैं। 84 लाख नहीं है। यह तो बहुत बड़ा गपोड़ा है। बाप कहते हैं भक्तिमार्ग में जो कुछ सुना है वह सभी रॉंग है। बाप आकर (सारी) दुनियां और हमको राइटियस बनाते हैं। इस समय सभी हैं अनराइटियस अधर्मी। सभी अधर्म करते हैं ना। धर्मात्मा कोई बनता नहीं है। पुण्यात्माओं की दुनियां ही दूसरी, पापात्माओं की दुनियां ही दूसरी। जहां पापात्माएं रहती हैं वहां पुण्यात्माएं नहीं रहतीं। पापात्माएं पापात्माओं को दान–पुण्य आदि करते हैं। पुण्यात्माओं की दुनियां में तो दान–पुण्य आदि करने की दरकार ही नहीं। वहां यह ज्ञान नहीं रहता है कि हमने 21 जन्मों का वर्सा लिया है। नहीं। यह ज्ञान यहां ही है। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। सो भी 21 जन्मों लिए। सदा सुख, हेल्थ–वेल्थ सभी मिल जाता है। वहां तुम्हारी आयु भी बड़ी रहती है। नाम ही है अमरपुरी। कहते हैं शंकर ने पार्वती को कथा सुनाई; परन्तु सूक्ष्मवतन में तो यह बातें होती नहीं। सो भी अमरकथा एक को थोड़े ही सुनाई जाती। यह सभी भक्तिमार्ग के गपोड़े हैं। जिस पर अभी तक खड़े हैं। सबसे बड़ा गपोड़ा है ईश्वर को सर्वव्यापी कहना। यह ग्लानी करते हैं ना। कितना बड़ा पाप है। बेहद का जो तुमको विश्व का मालिक बनाते (हैं) उनके लिए कहते हैं सर्वव्यापी है, ठिक्कर–भित्तर में है। कण–2 में है। अपने से भी जास्ती ग्लानी कर दी। मैं तुम्हारा कितना निष्काम सेवा करता हूँ। मुझे कुछ भी लोभ आदि नहीं है कि पहले नम्बर में बनूँ। नहीं। औरों को बनाने का रहता है। इसको कहा जाता है निष्काम सेवा। अपना कुछ भी न रखना; इसलिए तुम बच्चों को नमस्ते करते हैं। वह है निराकारी निरहंकारी। कोई भी अंहकार नहीं। कपड़े आदि भी वही हैं। कुछ भी बदला नहीं है। नहीं तो वह लोग सारी ड्रेस बदली करते हैं। ऑफिसर लोग भी बद(त)लाते हैं। प्रेज़ीडेन्ट प्राईम मिनिस्टर आदि भी ड्रेस बदलते हैं। इनका तो वही साधारण तन है। साधारण पहिरवाइस है। कोई फ़र्क नहीं। बाप भी कहते हैं मैं साधारण तन लेता हूँ। वह भी कौन–सा? जो खुद ही अपने जन्मों को नही जानते हैं कि हमने कितने पुनर्जन्म लिए हैं। वह तो 84 लाख कह देते हैं। सुनी सुनाई बातें हैं ना। गरूड़ पुराण में भी दिखाते हैं जनावर आदि क्या–2 बनते हैं। बाप कहते हैं यह सभी हैं रोचक बातें। इससे फायदा

कुछ नहीं। डराते हैं। ऐसा काम किया तो गदहा बनेंगे। यह बनेंगे। गाय की पूँछ पकड़ने लिए भी कहते हैं। अभी गाय कहां जावेगी जिसकी पूँछ पकड़ेंगे। स्वर्ग़ की तो गैयाँ ही अलग होती हैं। वहां की गैयाँ बड़ी फर्स्ट क्लास होती हैं। जैसे तुम 100% सम्पूर्ण, गैयाँ भी ऐसे बहुत फर्स्ट क्लास होती हैं। जिसको कपीला कामधेनु कहते हैं। जैसे तुम फर्स्ट क्लास वैसे कृष्ण की गैयाँ भी फर्स्ट क्लास होती हैं। कृष्ण कोई गैयाँ चराते नहीं हैं। उनको क्या दरकार पड़ी है? यह ब्यूटी दिखाते हैं कि वहां जनावर भी फर्स्ट क्लास होती हैं। वहां के लिए तो कॉमन बात है। जैसे राजाओं के पास कोई अच्छी चीज़ कॉमन होती है। वहां हर चीज़ फर्स्टक्लास होती है। बाकी ऐसे नहीं कि कृष्ण कोई गऊपाल है। कलैंडर्स आदि में तो कृष्ण को धनार बना देते हैं। कृष्ण को नम्बरवन हिंसक बना दिया है। स्वदर्शनचक्र से सभी का गला काटा। अभी वह हिंसा थोड़े ही करेंगे। दिखाते हैं अकासुर–बकासुर आदि को (मारते) रहते हैं। बड़ी ही हिंसक बातें दिखाई हैं। और फिर दिखाते हैं 16,108 रानियां थीं। दूसरे धर्म वाले ऐसे ही बातें उठाते हैं। पादरी लोग भी हिन्दुओं को बैठ समझाते हैं; क्योंकि देवता धर्म तो अभी है नहीं। यह एक ही धर्म है जो प्रायःलोप हो जाता है। यह बातें भी कोई शास्त्रों में नहीं है। बाप कहते हैं यह ज्ञान मैं बच्चों को ही देता हूँ विश्व का मालिक बनाने लिए। मालिक बन गये फिर ज्ञान की दरकार ही नहीं। ज्ञान हमेशा ज्ञानियों को दिया जाता है। भक्ति है अंधियारा; इसलिए गायन भी है ज्ञान सूर्य प्रगटा .....अभी बच्चे जानते हैं सारी दुनियां ही अंधियारे में है। कितने ढेर सतसंग आदि करते हैं। यह सभी हैं भक्तिमार्ग के। यह कोई भक्ति नहीं है। यह तो है सद्गति मार्ग। एक बाप ही सद्गति दाता है। तुम बच्चे भी भक्तिमार्ग में कहते हो बाबा आप आवेंगे तो हम आपके ही बनेंगे। दूसरा न कोई; क्योंकि आप ही ज्ञान के सागर हो, सुख का सागर हो, पवित्रता का सागर हो, सम्पत्ति का सागर भी हो। सम्पत्ति भी देते हो ना। तुमको कितना माला–माल कर देते हैं। तुम जानते हो हम शिवबाबा से 21 जन्मों लिए झोली भरने(ते) हैं अर्थात् नर से नारायण बनते हैं। भक्ति मार्ग में कथाएं तो बहुत सुनते आये हैं। भक्ति माना ही दुर्गति। सीढ़ी नीचे ही उतरते हैं। चढ़ती कला कोई की हो न सके। कल्प की आयु भी कितनी लम्बी–चौड़ी कह देते। अभी तुमको पता पड़ा है कल्प है ही 5000 वर्ष का। मैक्सीमम है 84, मिनिमम एक जन्म भी होता है। पीछे आते रहते हैं। निराकारी झाड़ है ना। फिर नम्बरवार आते हैं पार्ट बजाने। असल तो हम निराकारी झाड़ के हैं। फिर वहां से आते हैं पार्ट बजाने। वहां सभी पवित्र ही रहते हैं; परन्तु पार्ट सभी का अलग–2 है। यह बुद्धि में रखो। झाड़ भी बुद्धि में रखो। सतयुग से कलयुग अंत तक। यह बाप ने ही बताया है। यह कोई मनुष्य नहीं बताते। यह भी नहीं बताते हैं। एक ही सतगुरू है जो सर्व की सद्गति करते हैं। बाकी तो सभी गुरू हैं भक्तिामार्ग के। कितने कर्मकाण्ड आदि करते हैं। भक्तिमार्ग का शो कितना है। है रुण्य के पानी मिसल। इसमें इतना फंसे हैं तो कोई निकाल भी न सके। निकालने जाते हैं, खुद भी फंस जाते हैं। बाबा जानते हैं बहुत ब्राह्मणियां भी बनती हैं औरों को दुबण से निकालने। फिर खुद भी फंस जाती। ऐसी फंसती हैं जो कब निकल भी न सके। ऐसे भी बहुत केसेस होते हैं। बाबा नाम नहीं लेते हैं, नहीं तो नाम बदनाम हो जाये; क्योंकि दुश्मन भी बहुत हैं ना। यह भी सभी ड्रामा में नूँध है। नई बात नहीं। तुम्हारा सेकण्ड व सेकण्ड जो कुछ होता है सारा ड्रामा बना हुआ है। तुम्हारी बुद्धि में है अभी हम बेहद के बाप से राजयोग सीख नर से नारायण बनते हैं। विश्व का मालिक बनते हैं। तुम बच्चों को पहले तो यह नशा रहना चाहिए। बेहद का 5000 वर्ष बाद भारत में ही आते हैं। शान्ति का सागर है, सुख का सागर है। यह महिमा पारलौकिक बाप की है। तुम जानते हो यह महिमा तो बिल्कुल ही ठीक है। सभी कुछ एक से ही मिलता है। वही सुखकर्ता–दुःखहर्ता है। जिसके सामने तुम बैठे हो। तुम अपने–2 सेन्टर पर बैठे होंगे तो कहां योग लगावेंगे? बुद्धि में आवेगा शिवबाबा मधुबन में है। उनको ही याद करते हो।
शिवबाबा

खुद कहते हैं मैंने साधारण तन में प्रवेश किया है फिर से स्वर्ग़ बनाने। मैं ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ। तुम मेरी कितनी ग्लानी करते हो। मैं तो तुमको पूज्य बनाता हूँ। कल की बात है। तुम कितनी पूजा करते थे। तुमको इतना राज–भाग दिया, सभी गंवाये दिया। अभी फिर तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ। कब किसके बुद्धि में नहीं होगा। यह हैं दैवी गुणों वाले मनुष्य। हैं तो मनुष्य ना। 40–100 फुट लम्बे तो नहीं हैं। ऐसे नहीं कि इन्हों की आयु बड़ी है; इसलिए छत जितनी बड़े होंगे। नहीं। कलयुग में तुम्हारी आयु कम हो जाती है। बाप आकर तुम्हारी आयु बड़ी करते हैं; इसलिए बाप कहते हैं हेल्थ मिनिस्टर को भी समझाओ। बोलो, हम आपको ऐसी युक्ति बतावें जो कब बीमार होना ही न पड़े। भगवानुवाच बच्चे, अपन को आत्मा मामेकं याद करो तो तुम पतित से पावन, एवर हेल्दी बन जावेंगे। हम गैरन्टी करते हैं भारत में जब यह देवताएं थे तो इन्हों की आयु बहुत बड़ी थी। अभी भोगी बने हैं तो आयु भी कम हो गई है। योगी पवित्र होते हैं। तो आयु भी बड़ी होती है। अभी तुम राजऋषि हो। राजयोगी हो। वह सन्यासी तो कब राजयोग सिखाये न सकें। वह कहते हैं गंगा पतित–पावनी है। वहां दान करो। अभी गंगा में थोड़े ही दान किया जाता है। मनुष्य डालते हैं। वहीं पण्डे लोग बैठे रहते हैं, झट पानी से पैसे निकाल लेते हैं। गंगा को थोड़े ही मिलता है। पंडित लोग ले जाते हैं। वह पतित–पावनी गंगा समझकर दान करते हैं। अभी तुम तो बाप द्वारा पावन बनते हो। बाप को देते हो क्या? नहीं। बाप तो दाता है ना। तुम भक्ति मार्ग में ईश्वर अर्थ ग़रीबों को देते थे। गोया पतितों को देते थे। तुम भी पतित, लेने वाले भी पतित। तुम पावन बनते हो तो वहां किसको देने की बात ही नहीं होती। वह तो पतित, पतित को दान करते हैं। कुमारी को दान देते हैं। वह भी पतित बनती है तो सभी के आगे जाकर सर झुकाना पड़ता है। जब कुमारी पावन है तो उनको माथा टेकते हैं। खिलाते हैं, दक्षिणा भी देते हैं। शादी के बाद बरबादी हो जाती है। ड्रामा में नूँध है। फिर भी ऐसा रिपीट होगा। भक्ति मार्ग का भी पास्ट हो गया। सतयुग का भी समाचार बाप बताते हैं। तुम बच्चों को समझ पड़ी है। पहले बेसमझ थे। 100% बेसमझ। इसमें भी 100% बेसमझ उनको कहा जाता है जो सर्वव्यापी का ज्ञान सुनाते हैं; इसलिए ही बाप कहते हैं यदा यदा हि .....सर्वव्यापी का ज्ञान भी भारत में ही है। कहां से यह निकला? गीता से। अभी गीता कोई भगवान ने नहीं लिख ली है। गीता लिखी है मनुष्यों ने। सभी शास्त्र हैं भक्तिमार्ग की गिरने की। मेरे को कोई भी पाते नहीं। मैं जब आता हूँ मैं ही आकर सद्गति करता हूँ सभी की और मैं एक ही बार आकर पुरानी दुनियां को नई बनाता हूँ। मैं ग़रीब निवाज़ हूँ ना। गरीबों को ही साहूकार बनाता हूँ। साहूकारों को ग़रीब; क्योंकि ग़रीब तो झट बाप का बन जाते हैं। कहते हैं बाबा हम भी आपके हैं। यह सभी कुछ आपका है। बाप कहते हैं अच्छा, ट्रस्टी होकर रहो। बुद्धि से समझो यह हमारा नहीं, बाप का है। इ(स)में बड़ी सच्चाई चाहिए। फिर तुम घर में भोजन बनाकर खाते हो। गोश(या) यज्ञ से खाते हो ; क्योंकि तुम भी यज्ञ के, सभी कुछ यज्ञ के हो गया। घर में ट्रस्टी हो शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो; परन्तु पूरा निश्चय चाहिए। निश्चय में गड़गड़(गड़बड़) हुई तो हरिश्चन्द्र की कथा हो जावेगी। अमानत में ख़यानत डाली। (बाप) को तो सभी कुछ बताना, समझाना है। बाप समझाते हैं मैं ग़रीब निवाज़ हूँ। गीत भी है ना आखिर वह दिन आया आज जिस दिन का रास्ता तकते थे। आधा कल्प भक्ति मार्ग में याद करते आये। आखिर मिला। अभी भक्ति मुर्दाबाद, ज्ञान ज़िन्दबाद होना है। सतयुग ज़रूर आना है। बीच में संगमयुग। जिसमें तुम उत्तम ते उत्तम पुरुष बनते हो। तुम पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले थे फिर 84 जन्मों बाद अपवित्र बनते हो। फिर पवित्र बनना है। कल्प पहले भी तुम ऐसे बने थे। कल्प पहले भी जितना जिसने पुरुषार्थ किया है वह करेंगे। अपना वर्सा लेंगे। साक्षी हो देखते रहो। बाप कहते हैं तुम मैसेन्जर हो। और तो मैसेन्जर पैगम्बर होते नहीं। जो भी आते हैं गुरू लोग तो हैं नहीं। सदगुरू सिर्फ़ एक ही है। बाकी को गुरू क्यों कहते हैं? गुरू तो सद्गति

करने वाला एक ही है। वह (नानक) तो आया सिर्फ़ अपने धर्म की स्थापना करने। तो गुरू कैसे ठहरे? सभी दुर्गति में ही पड़े हैं। बाप कहते हैं मैं उन सभी को सद्गति देता हूँ। क्राइस्ट भी बहुत जन्मों के अंत में यहां ही है। तुम्हारे जितने जन्म तो वह लेते नहीं हैं। पिछाड़ी तक छोटे टार–टारियां आदि निकलते रहते हैं। तो वह छोटे–2 गुरू बन पड़े हैं। उन्हों की कितनी महिमा है। नये–2 जो आते हैं वह कितने गुरू बन जाते हैं। ..... पकड़ लेती हैं। बाप कहते हैं मैं आकर सर्व की सद्गति करता हूँ। गीता भी है सर्व शास्त्र मई शिरोमणी भारत भी सर्व खण्डों से श्रेष्ठ है। सच्च खण्ड भी उनको कहा जाता है। जो फिर झूठ खण्ड बनता है। अभी फिर और सभी खण्डों का विनाश हो जावेगा। भारत भी झूठ खण्ड है ना। अपने धर्म को ही नहीं जानते। ड्रामा में ये भी नूँध है। अनेक धर्म का विनाश, एक धर्म की स्थापना। इसमें भारत भी आ जाता है। देवी–देवता धर्म वाले ही अभी कर्म भ्रष्ट, धर्म भ्रष्ट बन गये हैं। पहले पावन फिर पतित बन जाते हैं। अपन को देवी–देवता कह नहीं सकते। पवित्र पूज्य से अपवित्र पुजारी बन पड़े हैं। फिर सो पूज्य बनते हैं। 84 जन्मों की समझानी है। इतना समय हम उतरते आये हैं; इसलिए सीढ़ी बनाई है। सारी दुनियां की उतरती (कला) होती है, फिर चढ़ती कला होती है। चढ़ती कला तो हैवेन, उतरती कला तो हेल। यह चित्र तो छोटे बच्चों को समझाने लिए बनाये हैं। बनाई भी देखो कैसे है। बच्चों को सा. कराते गये, खुद बैठ चित्र बनाये। यह चित्र बनाओ, यह करैक्ट करो। विनाश काले विपरीत बुद्धि का चित्र समझाओ। डरो मत। कई तुमको कहते हैं तुम हमको कौरव क्यों कहते हो? अरे, यह तो अर्थ है। कुरू का अर्थ है कौरव। अँग्रेजी में कॉंग्रेस कहते हैं। इसमें मूँझने की तो दरकार नहीं। यह तो गीता में भी लिखा हुआ है। विनाश काले विपरीत बुद्धि। विपरीत बुद्धि माना दुश्मनी। सद्गति करने वाले बाप को कह देते ठिक्कर–भित्तर में है। कितनी दुश्मनी। बाप कहते हैं जब ऐसी हालतें ..... हालत होती है, फिर बाप आकर तुमको राजयोग सिखलाते हैं। राजयोग और कब कोई सिखलाये न सके। भगवानुवाच ही है मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। यह (ल.ना.) राजा–रानी हैं। जिनको विश्व का मालिक बनाया वही फिर 84 जन्मों बाद फिर रंक बन जाते हैं। फिर राव बनाते हैं। इनकी आत्मा रंक बनी है फिर रंक से राव बन रही है। कितनी सहज बात है। बाप विश्व का मालिक बनाते हैं तो फिर और कोई पढ़ाई पढ़ कर क्या बनेंगे? उस पढ़ाई की प्रारब्ध तो भोग न सके। विनाश हो जावेगा। बच्चे पैदा कर भी क्या करेंगे? वर्सा तो लेंगे नहीं। फिर ऐसे बच्चे पैदा करने की दरकार ही क्या है; इसलिए बाप कहते हैं विकार छोड़ दो। शास्त्र में लिख दिया है शंकर पार्वती पिछाड़ी फिदा हुआ। फिर वीर्य गिर गया.....भक्तिमार्ग में ऐसी–2 बातें सुनी हैं ; परन्तु ऐसे तो है नहीं फिर भी यही बातें सुनेंगे। तुम भी भक्त थे ना। अभी तो बाप से वर्सा लेना है। बाप शान्ति का सागर, ज्ञान का सागर, सम्पत्ति का सागर है। सागर से रत्नों की थालियां भरकर देते हैं। सागर से यह नदियां निकलती हैं ना। तुम भी सागर से निकले हो। ज्ञान की रत्न देते हो; परन्तु लेने वाले, धारण करने वाले भी हो ना। बहुत अच्छा–2 भी कहते हैं। आपका ज्ञान बहुत अच्छा है। हम भी काम उतार कर आवेंगे। बाबा तो कहते हैं यहां से गया और खलास। जैसे गर्भजेल से इन्जाम करते हैं फिर भूल जाते हैं। पापात्माएं तो रहते हैं ना। तो उन्हों के लिए फिर जेल आदि सभी यहां है। वहां तो यह बातें ही नहीं। वह है स्वर्ग। तुमने अनेक बार स्वर्ग के सुख देखे हैं। बाप ने स्मृति दिलाई है। कितना बार तुमने ज्ञान सुना होगा। तुम विश्व के मालिक बने होंगे। अभी हो बेगर। बेगर टू प्रिंस। यह चक्र चलता रहता है। नई सो पुरानी, पुरानी सो नई। यह बाप ही समझाते हैं। जो नई दुनियां स्थापन करते हैं वही तो समझावेंगे ना। परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापन करते हैं। और कोई को पता नही है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

–:शिवबाबा याद है?:–